ईसा (अलै0) का मर्तबा (Position)

हमारे बहुत सारे ईसाइ भाईयों को यह गलतफहमी है कि मुस्लिम ईसा (अलै0) पर विश्वास नही रखतें या फिर इस्लाम में ईसा (अलै0) का कोई स्थान नहीं है। लेकिन असलियत में इस्लाम के अनुसार ही हम मुसलमान यह विश्वास रखते हैं कि ईसा मसीह (अलै0) अल्लाह के पाक पैगम्बरों (Prophets) में से एक है, और यह कि वह मसीहा (Christ) है और उनका जन्म चमत्कारी तौर पर कुआँरी मरियम के गर्भ से हुआ था। हम यह भी विश्वास रखते हैं कि वे अल्लाह की मदद और मर्जी से मुर्दों को जिला देते थे और अंधों और कोढ़ियों कों ठीक कर देते थे। हम यह भी कह सकते हैं कि अगर कोई मुस्लिम ईसा मसीह (अलै0) पर ईमान न रखे और उनकी इज्जत ना करे तो वह मुस्लिम ही नहीं है।

दुनिया के तमाम धर्मों में इस्लाम ही एकमात्र गैर ईसाइ धर्म है जो ईसा (अलै0) पर यकीन रखने को ईमान का एक दर्जा मानता है ।

मरयम - ईसा की माँ

कुरआन में जो आयत (Verse) ईसा (अलै0) की जन्म के बारे में बताती है वह सूरह आल इमरान पाठ 3 आयत 42, उसमें लिखा है:–

"और जब फरिश्तों ने कहा हे मरयम!
अल्लाह ने तुझे चुन लिया और
तुझे सुथराई दी, और तुझे
संसार की स्त्रियों के मुकाबले में चुन लिया।"

तो मरयम को कुरआन में सारे जहान की औरतों से उपर कहा गया है। ऐसा वाक्य शायद ही पुरे बाईबल में मौजूद है। और तो और कुरआन में एक सूरा (पाठ–19) का नाम "मरयम" है। पूरे बाईबल के 66 पाठों में से एक भी पाठ का नाम मरयम नहीं है।

1. नोट : अलै0 – अलैहिस्सलाम (उन पर शांति हो)

क्या अलग है हम में

उपर लिखी बातें पढ़कर किसी भी ईसाई भाई को यह लग सकता है कि जब यही बातें मुस्लिम और ईसाई दोनों मानते हैं तो इख्तलाफ (Difference) कहा है। फर्क यह है कि हमारे ईसाइ भाई ईसा (अलै0) को 'प्रभु' मानते हैं जो कि हम मुसलमान नहीं मानते । असल में पूरे बाईबल में एक भी साफ और खुली हुई आयत नहीं है जिसमें कि ईसा (अलै0) खुद कह रहे हैं कि "में खुदा हैं" या "मेरी इबादत करो"।

ईसा कहते है बाईबल में

ईसा (Jesus A.S.) अपने बारे में खुल कर कहते हें कि–

"मेरे पिता मुझसे बड़े हैं" (युहन्ना, John 14 :28)

"मेरे पिता सबसे बड़े हैं" (युहन्ना, John 10 : 29)

"मैं ईश्वर की इच्छा से शैतान को भगाता हूँ।"

(मत्ति, Matthew 12 : 28)

"मैं ईश्वर की उंगली से शैतान को भगाता हूँ।"

(लूका, Luke 11 :20)

और ईसा (Jesus A.S.) साफ शब्दों में कहतें हैं –

"मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता, जैसा सुनता हूँ वैसा न्याय करता हूँ मेरा न्याय सच्चा है, क्योंकि मैं अपनी इच्छा से नहीं परन्तु अपने भेजने वाले की इच्छा से फैसला करता हुँ"

(John 5:30)

अब हम उपर पढ़ कर यह देख सकते हैं कि ईसा मसीह (अलै0) साफ साफ खुले तौर पर यह कह रहे हैं कि मैं स्वंय कुछ नहीं कर सकता बल्कि खुदा या परमेशवर ही सबसे बड़ा है और उसी की मदद से वह सारे चमत्कार करते हैं तो फिर भी उन्हें ही खुदा मान लेना विरोधाभास (Contradiction) होगा ।

ईसा (अलै0) - एक इंसान

मुस्लिम अवधारण यह है कि हालाँकि ईसा (अलै0) अल्लाह के पाक पैगम्बर हैं लेकिन हैं वह इंसान है, वह अल्लाह के अवतार नहीं हैं ।

"मसीह मरयम के पुत्र कुछ नहीं बस एक "रसुल" हैं उससे पहले भी बहुत सारे रसूल गुजर चुके हैं । उसकी माता बहुत ही सच्ची थी। दोनों भोजन करते थे ।

देखो हम कैसे उन के लिए आयतों खोल कर बयान कर रहे हैं फिर देखों ये कहाँ से उलटे भटके चले जा रहे हैं ।"

(पवित्र कुरआन 5:75)

और इस तथ्य को बाईबल भी समर्थन करता है

एकटस 2:22 में

"हे इजराईलियों ये बातें सुनो कि यीशु नासरी एक मनुष्य था जिस का परमेश्वर की और से होने का प्रमाण उन सामर्थ के कामों और आश्चर्य के कामों और चिन्हों से प्रगट है, जो ईश्वर ने तुमहारे बीच उसके द्वारा कर दिखालाए जिसे तुम आप ही जानते हो ।

(प्रेरितों के काम, Acts 2:22)